।। वाय निरणा को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ वाय निरणा को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

कोरम किरकल नाग देव दत्त || धनंजे होई ||
पान अपान हुलास || चुपक वित्रक केहे सोई ||
तेज खुलासा जोस || भ्रान बैकण सिस हीरं ||
शब्द संगम सुख प्राण || बिरंग खास तरंग ||
धीरं धुरम धुन || तत्त वाय फेर चोरासी जाण ||
सुखराम उलट ऊँची चढे || ज्याँ तत्त मूळ बखाण || १ ||

वायु निम्न प्रकार की है । कुर्म,क्रुकल,नाग,देवदत्त,धनंजय,पान,अपान,उल्हास,चुपक, वित्रक,तेज,खुलासा,जोश,भ्रान,बहीकण,सीस,हिरंग,शब्द,संगम,सुख,प्राण,बिरंग,खास,तरंग, धीर,धुरम, धुन्न,तत्त इस प्रकार से चौरासी वायु जानो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जो उलटकर उपर चढ़ती है,वही तत्त मूल वायु है । || १ ||

अर्थ ||

कोरम सुं आँख फरके || किरकल सुं छीक आवे ||
नाग सुं डकार आवे || देव दत्त सुं उबाक आवे ||
धनंजे सुं मुवा पीछे सूजे || पान सुं बाव सुरे ||
अपान सुं मळ झड़े || हुलास सुं मन हुलसे ||
चुपक सुं दर्वाजा जडी जे || तेज सुं दर्वाजा खुले ||
खुलास सुं दिल खुले || जोस सुं तामस आवे ||
भिरांन सु भ्रम ऊठे || बेकण सुं जीव बेके ||
सिस सुं समता आवे || हिरंग सुं हरष उपजे ||
सबद सुं बोले || सुषमना सुं संगम होय ||
सुषम सुं साच आवे || रंग से बिरज उतरे ||
धिरंग वाय से धात लागे || धुम से अनहद गाजे ||
धुन वाय से धूजे || तत्त वायसे तलब लागे ||
तत्त मुळ वाय उलट उँची चडे || ज्याँ सुं पेदास हुई ||
तिण मे जाय मिले || चोरासी वाय हे ||
तिकण मे अठाईस बड़ी || तिण मे चवदे बड़ी ||
तिण मे सात बड़ी || तिण मे पांच बड़ी ||
तिण मे एक बड़ी || तत्त वाय मुळ वायं बड़ी ||
ब्रम्ह से ऊपनी || तत्त मुळ खोज ||
ब्रहंमंड चडे सो ब्रम्ह कहाय ||

कुर्म वायु से आँखे फड़कती है । क्रुकल वायुसे छींक आती है । नाग वायु से डकार आता

है । देवदत्त वायु से उबाक आती है । धनंजय वायु से,मरने के बाद मुर्दा फूलता है ।(धनंजय वायु मृत्यु के समय आती है । मृत्यु के समय के पहले धनंजय वायु नही आती है और धनंजय वायु के आने पर,वह प्राणी किसी से भी बचता नही है । कुछ मिनट से उसकी मृत्यु होती है । और मर जाने पर मुर्दा इस धनंजय वायु से फूलता है । प्राण वायु से मुर्दा सड़ता है । अपान वायु से मल झड़ता है । उल्हास वायु से मन उल्हासित होता है । चुपक वायु से दरवाजे लगकर चुप रहता है । कुछ बोला नही जाता है । तेज वायु से दरवाजा खुलता है । खुलासा वायु से दिल खुलता है । जोश वायु से तामस(क्रोध)उत्पन्न होता है । भ्राण वायु से भ्रम उत्पन्न होता है । बहीकन वायु से जीव बहकता है । सीस वायु से समता(शांतता)आती है । हिरंग वायु से हर्ष उत्पन्न होता है । शब्द वायु से बोलने लगता है । सुष्मना वायु से संगम होता है । सुषम वायु से विश्वास आता है । पिअंग वायु से उल्टी होती है । बिरंग वायु से विरह उत्पन्न होती है । खासन वायु से खाँसी होती है । विरंग वायु से वीर्य उतरता है । धिरंग वायु से धातु लगती है । धुम वायु से अनहद गाजता है । धुन्न वायु से धूजता है । तत्त वायु से तलब लगती है । तत्त मूल वायु उलटकर उपर चढ़ती है । जहाँ से उत्पन्न हुआ वही जाकर मिलता है । चौरासी वायु है जिसमें से अट्ठाईस में चौदह बड़ी है,उन चौदह में सात बड़ी है । उन सात में पाँच बड़ी है । इन सभी में एक तत्तमूल वायु बड़ी है । यह तत्त मूल वायू शोधकर,ब्रम्हाण्ड में चढ़ जाती है । ब्रम्हाण्ड में जो चढ़ती है,उस वायु को ही ब्रम्ह वायु कहते है ।।।१।।

।। इति वाय निरणा को अंग संपूरण ।।